International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 29-11-2018; Accepted: 31-12-2018
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 1; January 2019; Page No. 42-43

शरद सिंह के साहित्य में नैतिकता का समाज पर प्रभाव

सोनिका [1], डॉ0 दर्शना [2]
[1] शोधकर्त्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।
[2] शोध निर्देशक, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
समाज के साथ शरद सिंह का बहुत ही करीब का घनिष्ठ संबंध रहा है। सामाजिक क्रिया–कलाप का अतिसूक्ष्म निरीक्षण करना उनके नस–नस में बसा हुआ है। समाज की स्त्रियों को उन्होंने बहुत करीब से देखा, समाज की स्त्रियाँ वेश्याव्यवसाय करने के लिए क्यों मजबूर है? इसका उन्होंने गहराई में जाकर अध्ययन किया और वेश्याओं को सुधारने के लिए अनेक सरकारी योजनाओं को उनके पास लाने का प्रयत्न किया, उनके बच्चों को अच्छा मार्गदर्शन किया जिससे आज वेश्या समाज में जन्में स्त्री एवं पुरुष बड़े ओहदे पर कार्यरत हैं।

मूल शब्द : सामाजिक, शरद सिंह।

प्रस्तावना
शरद सिंह कहती है कि मैं पुरुषों की विरोधी नहीं हूँ, किन्तु उस विचारधारा की विरोधी हूँ जिसके अन्तर्गत स्त्री को मात्र उपभोग की वस्तु के रुप में देखा जाता है। विचारों का यह पुरुष–प्रधान परिवेश ही जिम्मेदार है उन औरतों के जीवन की त्रासदियों के लिए जो अतीत में 'गणिकाएँ', 'देवदासियाँ' अथवा 'कॉलगर्ल' 'बार डांसर' और 'सेक्स वर्कर' कहलाती है। अर्द्धशिक्षितों के बीच इन्हीं औरतों को 'नचनिया', 'पुतरिया' और 'धंधेवाली' कहा जाता है। समाज में देह–व्यापार आज भी जीवित है तो मात्र इसलिए कि पुरुषों में स्त्री–देह को खरीदने की प्रवृत्ति आज भी मौजूद है। स्त्रियों से जुड़े इस 'अपराध' को स्त्रियों की सहज उपलब्धता पर मढ़कर कोई भी समाज दोषमुक्त नहीं हो सकता।

साहित्य की समीक्षा
कस्बाई सिमोन
'कस्बाई सिमोन'शरद सिंह जी का तीसरा उपन्यास है। युवा उपन्यासकार शरद सिंह ने अपनी विशिष्ट कथा–शैली और अछूते विषयों के चुनाव के कारण पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। उनकी सद्य प्रकाशित कृति 'कस्बाई सिमोन' में भी उनकी यह विशेषता देखी जा सकती है। यह उपन्यास 'लिव इन रिलेशनशिप' जैसे विषय को लेकर है, जो खासकर भारतीय समाज के लिए अपेक्षाकृत नया है। जिस समाज में प्रेम करने को अक्षम्य अपराध की तरह देखने का आम चलन हो, वहाँ ऐसे विषय पर कलम चलाना साहस की बात कहीं जाएगी। वस्तुतः हिंदी साहित्य के स्त्री–विमर्श के क्षेत्र में यह उपन्यास एक अहम हस्तक्षेप है, जिसमें न सिर्फ स्त्री की सदियों पुरानी परतंत्रता का प्रतिकार किया गया है, बल्कि उसे मुक्ति का विकल्प भी दिखाया गया है।

औरत तीन तस्वीरें
'औरत तीन तस्वीरें' डॉ. शरद सिंह जी का चौथा उपन्यास है। 'औरत तीन तस्वीरें' इस पुस्तक में डॉ. शरद सिंह ने औरतों की पहली तस्वीर, दूसरी और तीसरी तस्वीर का वर्णन किया है। 'औरत तीन तस्वीरें'शरद सिंह की स्त्री–विमर्श पर आधारित पुस्तक है। स्त्री–विमर्श के क्षेत्र में शरद सिंह का नाम सुपरिचित है। अपनी नव्यतम पुस्तक 'औरत : तीन तस्वीरें' मेंशरद सिंह ने स्त्री को तीन स्तरों में विभाजित किया है। वे हैं – अपने साहस, क्षमता और योग्यता को साबित करके पुरुषों की बराबरी करते हुए पहली पांत में आनेवाली स्त्रियाँ।

बाबा फरीद अब नहीं आते
शरद सिंह के प्रस्तुत कहानी–संग्रह ''बाबा फरीद अब नहीं आते'' में कुल–मिलाकर इक्कीस कहानियों का संग्रह किया गया है जैसे – ''बाबा फरीद अब नहीं आते'', ''बाशिंदे का पिंजरा'', ''चाकू'', ''निबौरी'', ''पत्थरफेंकन'', ''ययाति पुनःपुनः'', ''यह भी सही'', ''बयान जारी है'', ''कृपया शांत रहिए!'', ''गीला अँधेरा'', ''यथावत'', ''बकरी'', ''उन्नीस साल की लड़की'', ''रानीगंज की बऊ'', ''छुटकी, धूप के टुकडे और संविधान'', ''तेरही का न्यौता'', ''बेहरबान्'', ''मुँहदिखाई'', ''एक बार और'', ''अल्पविराम'', ''रूठी नहीं है कोपवती'' इत्यादी।

साहित्य में नैतिकता का समाज पर प्रभाव
डॉ. शरद सिंह का उपन्यास 'कस्बाई सिमोन' में सुगंधा की माँ को जब सुगंधा के 'लिव इन रिलेशनशिप' के बारें में पता चलता हैं तो माँ सुगंधा से कहती हैं कि बेटी सुगंधा, तुम रितिक से शादी कर लो। एक जवान बेटी शादी के बिना पराए पुरुष के साथ नहीं रह सकती। लेकिन सुगंधा ने अपनी माँ की बात नहीं मानी और रितिक के साथ वह 'लिव इन रिलेशनशिप' में रहती है। लेकिन बाद में उसे अपने माँ की एक–एक बात याद आती है कि माँ सच कहती थी। जैसे –' तुम उससे शादी करने का विचार बना रही हो न?' माँ ने पूछा था। 'नही! मैं ऐसा कोई इरादा नहीं रखती हूँ। रितिक मेरा मित्र हैं, इससे अधिक और कुछ नही।'
''पचकौड़ी' उपन्यास में भी चाचा ठाकुर का बेटा महेंद्र अपने साथ के चार लड़को के साथ मिलकर जब गाँव की लड़की लताबाई से बलात्कार करता हैं और भैयाजी ;चाचा ठाकुर के भाईद्ध को जब इस बात का पता चलता हैं तो वह पचकौड़ी को लताबाई के घर भेजकर, लताबाई को केस वापस लेने के लिए कहते है और अस्पताल में ठीक होने के लिए भरती करवा देते हैं। यहाँ भैय्याजी का व्यवहार उस लताबाई के प्रति नैतिकता का होता हैं।

'पचकौड़ी' इस उपन्यास में भैय्याजी पचकौड़ी को चुनाव लढ़ने के लिए खड़ा कर देते और चुनाव जीत जाने के बाद पचकौड़ी को उसका सम्मान भी देते हैं। याने की घर में काम करने के लिए लाए एक नौकर को नौकर से मुखिया बना देना नैतिकता का उदाहरण हैं।

समकालीन महिला साहित्यकारों में डॉ. शरद सिंह जी का नाम महत्वपूर्ण हैं। डॉ. शरद सिंह जी एक सुप्रसिद्ध लेखिका हैं। उनका बहुआयामी साहित्य हिंदी साहित्य के लिए देन हैं। वे बहुभाषाविद और साहित्यकार ही नहीं अपितु जानी–मानी स्तंभकार भी हैं। डॉ. शरद सिंह जी की विभिन्न विषयों पर अब तक तीस से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें अधिकत्तर पुस्तकों में स्त्रीविमर्श पर ही उन्होंने लेखन किया हैं। और जो नारी पर आधारित हैं। उनके साहित्य में स्त्री के जीवन संघर्ष की विशेषतः बेडियाँ समाज की नारी–विमर्श की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई हैं। उनके साहित्य में यथार्थ दृष्टि एवं वैकल्पिक समाज के व्यावहारिक चिंतन में एक सैद्धांतिक पक्ष भी कार्यरत हैं। उनकी जीवन दृष्टि अध्ययन एवं चिंतन से बनी हैं। उनकी मूल वैचारिकता दर्शन से जुड़ी हैं।

इक्कीसवी दशक की महत्वपूर्ण लेखिका डॉ. शरद सिंह जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं आर्थिक वास्तविक स्थिति को स्थापित करने की चेष्टा की हैं। उनके सामने नारी अस्मिता का यथार्थ बोध हैं। नारी की अस्मिता तथा उसके विभिन्न समस्याओं पर गहराई से प्रकाश डाला हैं। उन्होंने पुरुष प्रधान कर्मठ समाज में अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करती नारी, मुक्ति के लिए तड़पती नारी, विद्रोही नारी आदि का विवेचन किया हैं। नारी इस साहित्य की केंद्रबिंदू हैं। डॉ. शरद सिंह का साहित्य नारी केंद्रित हैं। नारी की अस्मिता, नारी की स्वतंत्रता के लिए लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से संघर्ष किया हैं। आधुनिकता और पारंपारिक रुढ़ी ग्रस्त समाज के बीच जूझनेवाली नारी का चित्रण डॉ. शरद सिंह ने किया हैं। डॉ. शरद सिंह जी ने अपने साहित्य में नारी का शोषण, व्यवसायी नारी की व्यथा, वेश्या व्यवसाय से संलग्न नारी की व्यथा, नारी की यातना, संघर्ष आदि विषयों पर विविध आधुनिक संदर्भों के साथ समग्र लेखन किया हैं जो हमें सोचने के लिए विवश करता हैं।

उपसंहार

डॉ. शरद सिंह ने नारी के विविध आयामों को लिखने के बावजूद भी उनकी गहरी सोच विचार ने अन्य आयामों का लेखन भी अपने साहित्य में किया हैं। समकालीन परिस्थितियों का व्यापक एवं गहन प्रभाव उनके लेखन पर पड़ा हैं जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश समाविष्ट हैं। जिनका शरद सिंह ने काफी गहराईयों के साथ यथार्थ चित्रण किया हैं। यह परिवेश ही उनके लेखन की आधारशीला हैं। वे परिवेश से प्रेरणा पाकर युगीन सत्य से हमें रुबरु करवाती हैं। शरद सिंह के उपन्यासों में आधुनिक जीवन की झाकियाँ अधिक मिलने के कारण शहरी संस्कृति का चित्रण अधिक हुआ है। साथ ही ग्रामीण परिवेश की खूब झलक दिखाई देती हैं। शरद सिंह का सारा जीवन मध्यप्रदेश से जुड़ा होने के कारण उनके साहित्य में मध्यप्रदेश की पीड़ित/पिछड़े जाती की नारीयाँ ;बेडनियाँ समाज कीद्ध और उनकी समस्याओं का चित्रण अधिक मिलता हैं।

डॉ. शरद सिंह और समकालीन महिला साहित्यकार और समकालीन महिला साहित्यकारों के साहित्य में डॉ. शरद सिंह के स्थान को निश्चित करने के लिए जिन मुद्दो को यहाँ उठाया हैं उनसे इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि डॉ. शरद सिंह एक बहुआयामी महिला साहित्यकार हैं, उन्होंने अनेक साहित्य विधाओं में मौलिक लेखन कर अपने साहित्यिक कौशल को सिद्ध किया हैं।

संदर्भ

1. कस्बाई सिमोन, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–106
2. कस्बाई सिमोन, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–208
3. घरेलू हिंसा वैश्विक संदर्भ, विभा देवसरे, पृष्ठ संख्या–15–16
4. औरतें तीन तस्वीर, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–55
5. साभार–दैनिक 'नईदुनिया' में 13 नवम्बर 2011 को प्रकाशित डॉ. शरद सिंह का लेख
6. बाबा फरीद अब नहीं आते, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–14
7. बाबा फरीद अब नहीं आते, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–13–14
8. छिपी हुई औरत और अन्य कहानियाँ, डॉ. शरद सिंह, पृष्ठ संख्या–124